छठा अध्याय

छठा अध्याय
उपसंहार

प्रस्तुत अध्ययन के उपरांत हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व इन दोनों में ही एक प्रतिभा-संपन्न बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी रहें है।

हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में सफलता के साथ लेखन करने के बावजूद भी लाल को एक सफल नाटककार ही माना जाता है। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटककारों में लाल एक सशक्त, कुशल एवं प्रयोगशील नाटककार के रूप में हमारे सामने आए। लाल की दृष्टि में रंगमंच और नाटक का संबंध शरीर और आत्मा के संबंध जैसा ही है। एक के बिना दूसरे की कल्पना असंभव है। हिंदी नाट्यजगत में अपनी अलग-सी पहचान बनानेवाले मोहन राकेश, लक्ष्मीनारायण मिश्र जैसे महान नाटककारों की पंक्ति में डॉ. लाल बैठते हैं। लाल के नाटकों की विषय परिधि काफी व्यापक रही है। उन्होंने यथार्थवादी, मिथकीय, पौराणिक, प्रतीकवादी, लीलानाटक, लोकनाट्य नाटक तथा रंगभूमि परख नाटकों का सफलता के साथ अंकन किया है। रंगमंच की दृष्टि से सफल नाटकों में 'व्यक्तिगत', 'सूर्यमुख', 'अँधाकुआ', 'करफ्यु', 'मादाकैक्टस', 'एक सत्य हरिश्चंद्र' तथा 'बलराम की तीर्थयात्रा' आदि नाटक विशेष महत्वपूर्ण है।

लाल एक सजग रचनाकार थे। उनके लेखन में समसामायिकता पाई जाती है। इसलिए लाल ने समाज की माँग के अनुसार लेखन किया। खासकर लाल ने नाटक लेखन में विविध प्रयोग किए इसलिए उनके नाटकों में हमें प्रभावधर्मिता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। लाल ने अपने नाटकों में अनेकविध समस्याओं को भर देने के कारण कहीं-कहीं उनके नाटकों में कथ्य और शिल्प में शिथिलता पाई जाती है। लेकिन एक बात सर्व विदित है कि लाल ने नाटक एवं रंगमंच की सजीवता को बनाए रखने के लिए तथा उसमें घनिष्ठता स्थापित करने के लिए भरसक प्रयास किए। और इतना ही नहीं तो हिंदी के रंगमंच को पुनःप्रतिष्ठा दिलाने का काम किया और हिंदी नाट्य क्षेत्र में चली आई पाश्चात्य घुसखोरी को चलता-सा किया और भारतीय नाट्य परंपरा का, समृद्ध प्राचीनता का दर्शन कराया और आनेवाली पीढ़ि के लिए नाट्यक्षेत्र में नींव के पत्थर-सा काम किया। इसलिए लाल को हिंदी नाट्यक्षेत्र में, रचना क्षेत्र में मील का पत्थर कहा जाता है।

हिंदी नाट्य क्षेत्र में मुख्यतः रंगमंच की खोज तथा विस्तार का पर्व जो भारतेन्दु जी ने आरंभ किया था उसका उत्तरोत्तर इतना विकास नहीं हुआ था। हिंदी में अनेक से नाटककारों से अनेक नाटक लिखे जाते थे लेकिन उनका ध्यान रंगमंच विकास की ओर उतना नहीं था। लेकिन सन साठ के बाद नाट्यक्षेत्र के साथ-साथ रंगमंच क्षेत्र का विस्तार, विकास करने का भरसक प्रयास डॉ. लाल के साथ-साथ मोहन राकेश जी ने किया। डॉ. लाल नाटक और रंगमंच को एक अविभाज्य तत्व मानते हैं। लाल ने रंगमंच और नाटक को अपनी परंपरा से जोड़ने का प्रयास किया है। लेकिन परंपरा से जुड़ने का इतना तात्पर्य यह नहीं कि प्राचीनता, सनातनता से जुड़ जाना, बल्कि उन्हें वर्तमान से जोड़कर जीवन-साक्ष्य प्रस्तुत करना यही उद्देश्य लाल का रहा है।

लाल के नाटक तथा रंगमंच संबंधी विचार काफी आधुनिक है। वे कहते हैं कि आज का दर्शक नाटक चाहता है, प्रयोग नहीं। लाल मानते हैं कि प्रयोग तो हम बहुत कर चुके। नाटक लिखकर ही नाट्य-कार्य समाप्त हो गया ऐसा समझनेवालों को लाल कहते हैं कि नाटक लिखा नहीं जाता है, रचा जाता है। यह तो एक साधना है। नाटक की वास्तविक कसौटी उसकी पाण्डुलिपि नहीं, अपितु रंगमंच है। रंगमंच पर अभिव्यक्त होकर ही पता चलता है कि नाटक अपने कर्म में कितना सशक्त या निर्बल है। लाल मानते हैं कि रंगमंच पर अभिनीत करने के लिए ही नाटक लिखना चाहिए।

हिंदी साहित्य क्षेत्र में लाल एक अष्टपैलु व्यक्तित्व माने जाते हैं। अतः एक सफल अभिनेता के रूप में भी लाल ने कतिपय नाटकों में प्रशंसनीय अभिनय किया है। लाल मानते हैं कि अभिनय और अभिनेता एक अविभाज्य तत्व है। अभिनेता जिस कला के माध्यम से नाटक, दर्शक और स्वयं अपने आप को किसी विशेष दिशा अर्थात भाव, चित्त और रस तक की यात्रा की ओर ले जाए उस कला का नाम 'अभिनय' है। इस अभिनय का संबंध लाल ने केवल शारीरिक अभिनय तक सीमित नहीं माना और अभिनय के लिए आंगिक, वाचिक, आहार्य और सात्विक इन चारों प्रकार के अभिनयों की विशाल चर्चा की है। लाल अभिनेता संबंधी कहते हैं कि अभिनेता वह शक्ति है जिसका प्रवेश ही एक प्रकाश है। वे मानते हैं कि अभिनेता तभी सच्चा अभिनेता बनेगा जब वह कार्य से कर्म की दुनिया में प्रवेश करेगा। नाटककार जो कुछ रंगभूमि पर लाने में असमर्थ है, उसकी इस लाचारी की दिवार को तोड़कर जो उससे परे है, वहाँ दर्शक को ले जाए वही सच्चा अभिनेता है। अभिनेता रंगभूमि का वह अनिवार्य तत्व है जिसके बिना नाट्य घटित नहीं हो

सकता। लाल मानते हैं कि अभिनेता का अभिनय मन के भावों को अनुभूत करनेवाली कला है।

डॉ. लाल मानते है कि नाटक का प्रस्तुतिकरण होता है उसका प्रदर्शन कभी भी नहीं होता। क्योंकि प्रदर्शन हमेशा किसी पदार्थ, वस्तु, कपड़ों और हमारे सामान का होता है, हमारे भाव का नहीं। रंगभूमि के संदर्भ में तो नाट्य एक भाव है, जिसकी विशिष्ट स्तुति की जाती है, जिसकी प्रस्तुति होती है। अभिनेता अपने कर्मद्वारा श्रद्धा और विश्वास से अपने भावों को अपनी प्रस्तुती द्वारा रस दशा तक ले जाता है। यह एक भावानुभूति है। जिसमें दर्शक, अभिनेता एवं संपूर्ण दर्शक समाज एक राग-रंग में बंध जाते हैं। हमारे नाट्य में प्रत्येक भाव की अभिव्यक्ति के लिए रंगभूमि पर कभी वस्तुओं या पदार्थों की भरमार नहीं की जाती। रंगभूमि पर अभिनेता अधिकांश कर्म तो इशारों से भी कर लेता था और दर्शक उसका अहसास भी कर लेता था। इसीलिए वह प्रस्तुति है परंतु पश्चिम और यथार्थवादी मंच ने मंच को प्रदर्शन की वस्तु मानकर उसे वस्तुओं की भरमार का स्थल बना दिया। परिणामस्वरूप वह दर्शक को भाव से दूर ले गया और दर्शक वस्तुओं में ही बंधकर रह गया। अतः लाल की यह बहुत बड़ी मौलिक स्थापना है कि नाट्य भाव है और भाव की स्तुति होती है। जैसे हमारी उपासना में ईश्वर के प्रति प्रदर्शन नहीं होता परंतु उसकी स्तुति होती है, उसके लिए तो शब्दों की भी आवश्यकता नहीं, मौन-मुक स्तुति भी एक श्रेष्ठ प्रस्तुति है। इसीलिए लाल नाट्य को प्रदर्शन नहीं अपितु प्रस्तुति मानते हैं।

डॉ. लाल ने अपने जीवन ज्ञापन में अनेक भूमिकाएँ निभाई। अतः लाल एक सफल निर्देशक के रूप में भी सर्व परिचित है। डॉ. लाल ने निर्देशक के कार्य को महत्वपूर्ण माना है। वे मानते हैं कि निर्देशक का कार्य रंगभूमि के विविध अंगों, पक्षों एवं तत्वों के बीच तादात्म्य एकता स्थापित करना है। नाट्य-प्रदर्शन तो एक सामान्य कार्य है, निर्देशक का लक्ष्य और चरमसीमा नाट्य प्रदर्शन नहीं, अपितु नाट्य-प्रस्तुति है। और प्रस्तुति तो किसी शिल्पी या कलाकार का कर्म है। अतः निर्देशक वही सफल होगा, जिसका एक तरफ नाट्य-कृति से सामंजस्य होगा तथा नाट्य को एक भाव समझकर, उसकी प्रस्तुति को जितनी सहज और सरल बना पाएगा उसकी कला उतनी ही निखर पाएगी। यह रंगभूमि के निर्देशक को अवश्य समझ लेना होगा। लाल की निर्देशन संबंधी धारणा काफी सरल थी। अपनी इस अनोखी निर्देशन कला के दर्शन लाल ने कतिपय हिंदी नाटकों का, एकांकीयों का सफल निर्देशन करके दिए है। अतः लाल ने साहित्यजगत में प्रसंगानुकूलता को

निभाते हुए अपने हर काम को, हर कर्तव्य को बखुबी निभाया है और हर काम को अंजाम तक निभाया है।

डॉ. लाल की अनेक भूमिकाओं में एक दर्शक की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। लाल मानते है कि समूची नाट्य प्रस्तुति का भोक्ता दर्शक होता है। लाल रंगभूमि की प्रस्तुति में दो तत्व ही अनिवार्य मानते हैं। एक है अभिनेता तो दूसरा है दर्शक। यदि ये दो तत्व हो और बाकी कुछ भी न हो तो भी नाट्य संभव है। लाल मानते हैं कि सब कुछ श्रेष्ठतम होने के बावजूद रसिकरंजन रसज्ञ दर्शक नहीं तो सारा अनुष्ठान ही निष्फल है। यह दर्शक उनकी दृष्टि से ग्राहक है, भावक है। ग्राहक वह है जो भाव को ग्रहण करता है। नाट्य भी एक भाव है, इस भाव को जो ग्रहण करता है वहीं ग्राहक है, वही दर्शक है। आज का दर्शक नाटक से कोई मौज, मस्ती, मनोरंजन लेने आता है, विचार या यथार्थवादी ऊब नहीं, वह केवल नाटक चाहता है, प्रयोग नहीं। इस दर्शक की मनोवृत्ति को नाटककार, अभिनेता, निर्देशक और प्रत्येक रंगकर्मी को समझना होगा।

अतीत से प्रेरणा लेकर वर्तमान में जीना और वर्तमान में जीते-जीते भविष्य की सोचना यह विशेषता है लाल के व्यक्तित्व की। हिंदी नाट्य जगत की तत्कालीन अवस्था को देखकर लाल ने हिंदी नाटक के लिए व्यावसायिक रंगमंच की अपेक्षा की है, जिसमें दर्शक अपने आप टिकट खरीदकर उसकी ओर खिंचा आए। इसके साथ-साथ लाल ने नाट्य समीक्षकों को भी दर्शक, प्रेक्षक की प्रेक्षणीयता से नाट्य समीक्षा करने का आग्रह किया है। लाल मानते हैं कि नाटक यह कविता, कहानी और उपन्यास से भिन्न दृश्यकाव्य है। अतः उन विधाओं से उसकी समीक्षा भी भिन्न है। इस बात को नाट्य समीक्षकों को समझना चाहिए। और कविता, कहानी और उपन्यास की तुलना में एक दृश्यकाव्य विधा होने के कारण नाटक विधा को अलगता से जानना चाहिए। अतः लाल का नाट्यसृजन और रंग-दर्शन दोनों साथ-साथ चलते रहें हैं फिर भी उनके सृजन की तुलना में उनका दर्शन न केवल सशक्त एवं बलवत्तर है अपितु पूरे हिंदी रंग-दर्शन की परंपरा में उनका यह दर्शन सबसे अलग तथा महत्वपूर्ण माना जाता है।

डॉ. लाल के व्यक्तित्व पर महात्मा गांधी जी का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। लाल का उपन्यास साहित्य हो, कहानी साहित्य हो अथवा नाट्य साहित्य हो उसमें गांधीवाद की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। महात्मा गांधी जी का स्वातंत्रता आंदोलन चरखा, छप्पर, चक्की, कोल्हू, बकरी आदि उपकरणों से लड़ा गया। जिसे अंग्रेजों ने कमजोर समझा परंतु उसकी विस्फोटक जनशक्ति को वे

पहचान नहीं पाए। लाल ने अपने समग्र साहित्य में गांधी के उन्हीं उपकरणों की ओर, अपने लोगों की ओर, अपनी मिट्टी की ओर ध्यान देने का आग्रह किया है। लाल मानते हैं कि इन सभी में भीतरी शक्ति अपार है और हमारा अधिकांश जन-जीवन इनका अभिन्न अंग है।

साहित्य रचना संबंधी लाल के विचार सराहनीय है। वे कहते हैं कि कथा वह श्रद्धा है, जहाँ वस्तु या यथार्थ में काव्यत्व और कल्पना जुड़ती है। कथा में कसावट की कल्पना नहीं की जा सकती। कथा में निहित कविता तो तब कसी जाएगी जब वह भूमि पर खेली जाएगी। काव्यत्व नाटक पर कभी थोपा नहीं जा सकता, वह तो उसके दृश्यत्व और अंकस के भीतर से आता है। अतः यह कथा श्रद्धा का प्रतीक है। यह कथा कहानी से भिन्न वस्तु है। कहानी केवल यथार्थ और बौद्धिक धरातल पर खड़ी व्यक्तिगत विधा है। कथा सामाजिक रिश्ते से जुड़ी अयथार्थवादी रचना है, ऐसा लाल मानते है। जीवन में जो द्वैतभाव है, वह नष्ट हो जाए, यही है कथा रचने, कहने और करने की प्रक्रिया। और यहीं जीवन प्रक्रिया भी है। लाल के मतानुसार कथा में देव, दानव, मानव, पशु-पंछी तथा सारी स्थूल और सूक्ष्म सृष्टि तक का समावेश हो जाता है। लाल मानते हैं कि कथा जीवन की आकांक्षा है। अतः लाल के साहित्य रचना संबंधी विचार परवर्ती साहित्यकारों के लिए एक प्रेरणा-पथ माने जाते हैं।

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के 'देवीना' उपन्यास की कथावस्तु का आधार पुराण की प्रणय कथा दुष्यंत-शकुंतला रहा है, लेकिन इस अतीत की कथा में मौलिक परिवर्तन करके लाल ने उस कथा को वर्तमान समय की माँग के अनुसार आधुनिकता से अभिव्यक्त किया है। तथा लाल को इसमें काफी सफलता मिली है। तथा देवीना उपन्यास के पात्रों का चरित्र-चित्रण भी लाल ने सफलता के साथ किया है। 'देवीना' नामक युवती लाल के प्रस्तुत उपन्यास की नायिका है, तथा देवकुमार नामक युवक इस उपन्यास का नायक है। इन दोनों में से देवीना का चारित्र्य नायक की तुलना में काफी ऊपर उठा है। इसके साथ-साथ उपन्यास के अन्य पात्रों में बनिया, काली, माधवी, जोत्स्नाबाई, भागवंती, जानहजारा आदि नारी पात्रों का तथा मंगलबाबा, रामदीन, तकी, पुनीत, शाहमुहम्मद, भंवरा, गादुर मिसिर आदि पुरुष पात्रों को भी चरित्र-चित्रण सफलता के साथ किया है।

लाल ने अपने इस उपन्यास में कतिपय सामाजिक समस्याओं का अंकन भी काफी सफलता के साथ किया है। लाल ने जातीयता की समस्या को अभिव्यक्त करते हुए उसकी कथानकता को भी अंकित किया है। तथा मजदूरी की समस्या

को अभिव्यक्त करते हुए ग्रामीण जीवन की बेरोजगारी तथा उनकी दिशाहिनता को वास्तविकता के साथ अभिव्यक्त किया है। लाल ने परंपरागत मानसिकता को व्यक्त करते हुए उसमें उचित बदलाव की ओर संकेत किया है तथा पाश्चिमात्यीकरण, आधुनिकीकरण की चपेट में आकर नैतिकता को तिलांजली दी है। और नैतिकता के नाम पर खुलेआम अनैतिकता घटित हो रही है।

लाल ने प्रस्तुत उपन्यास में नारी जीवन को स्पष्टता से वाणी दी है। लाल नारी के परंपरागत जीवन को अभिव्यक्त करते हैं। साथ उसकी भयावहता को भी सरलता से व्यक्त करते हैं। लाल देवीना उपन्यास में नारी के वर्तमान जीवन को भी वास्तविकता के साथ व्यक्त करते हैं तथा नारी के कतिपय श्रेष्ठ गुणों की सराहना करके उसे वास्तविकता से सबके सामने लाते है तथा कही-कही नारी को पुरुष से भी श्रेष्ठ बतला देते हैं। नारी के परिवर्तित रूप की स्तुति करते हुए उसे वर्तमान समाज की तथा भविष्यकालीन समाज की परम आवश्यकता बतलाते है। उनके देवीना उपन्यास की नारी परंपरागत पुरुषी अहंकार को अपनी नारी शक्ति से परास्त करती है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के प्रारंभ में मेरे मन में कुछ प्रश्न उठ खड़े हुए थे। अध्ययन के उपरांत उनके निष्कर्ष इस तरह निकलते हैं।

1. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल हिंदी साहित्य के एक सफल नाटककार रहे है, तथा अपने अष्टपैलु व्यक्तित्व के दर्शन के लिए उन्होंने उपन्यास विधा का भी सफलता के साथ अंकन किया।
2. देवीना उपन्यास का मूल उद्देश्य नारी के परिवर्तनकारी रूप को वाणी देना रहा है।
3. प्रेम और आत्मरति के बीच मन तथा बुद्धि का द्वंद्व विद्यमान रहता है।
4. देवीना उपन्यास की कथावस्तु प्रतिकात्मकता का सहारा लेकर सफलता के साथ लिखी है।
5. 'देवीना' उपन्यास के विषय की पृष्ठभूमि अतीत कालीन पुरातन प्रणय-कथा दुष्यंत-शकुंतला है।
6. अतीतकालीन प्रेम चित्रण की व्याख्या करके उसे आधुनिककालीन परिवेश में व्याख्यायित करके नारी के परिवर्तनकारी रूप को अभिव्यक्त करना यहीं लाल जी का प्रयोजन था।

7. 'देवीना' उपन्यास के माध्यम से लाल जी ने नारी के आत्मसन्मान की रक्षा करके उसे पुरुष से भी श्रेष्ठ माना है।

8. लाल जी के इस उपन्यास के अधिकतम पात्र युवा है, अतः युवावर्ग का चहिता विषय प्रेम को लेकर उन्होंने युवावर्गों को अतीत और वर्तमान के फासले को दिखाया है।

9. जिस तरह लाल के नाटकों का स्वर परिवर्तनकारी है, उसी प्रकार उनके उपन्यासों का स्वर परिवर्तनकारी तथा नारी चेतनावादी रहा हैं।

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल ने हिंदी साहित्य का विभिन्न विधाओं में सफलता के साथ लेखन किया है फिर भी हिंदी साहित्य जगत में उन्हें एक सफल, सजग नाटककार के रूप में ही जाना जाता है। प्रस्तुत देवीना उपन्यास में उन्होंने नारी को महत्वपूर्ण स्थान दिया है तथा सदियों से उस पर चले पुरुषी अहंकार को पराजित तथा समाप्त किया है। अतः लाल के हिंदी साहित्य के योगदान को हिंदी साहित्यप्रेमी सदैव यादगार रखेंगे और डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल जैसे अष्टपैलु व्यक्तित्व की कमी को सदैव महसूस करेंगे।

अनुसंधान की नई दिशाएँ

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल जैसे महान हिंदी साहित्यकार को हमें नजदीक से जानना है, तो हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में निहित उनके विचारों को समग्रता से जाँचना, परखना चाहिए। अतः डॉ. लाल के विभिन्न विधाओं को लेकर आज स्वतंत्रता से अनुसंधान किया जा सकता है।

1. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के उपन्यासों में जीवन दर्शन।
2. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में चित्रित नारी जीवन।
3. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के कहानीयों में ग्रामीण परिवेश।
4. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल की एकांकीयों में स्त्री-पुरुष संबंध।

* * *